

## रॉबर्ट वानॉय, ओल्ड टेस्टामेंट हिस्ट्री, लेक्चर 10

### क्रिएशन ऑफ वूमन, इवोल्यूशनरी थ्योरी

#### 4. नारी की रचना

ए. आवश्यकता प्रदर्शित की गई

हम उत्पत्ति अध्याय 2 पर चर्चा कर रहे हैं और हम 4 पर आ गए हैं। "स्त्री की रचना।" आपने अपनी रूपरेखा शीट पर देखा है कि कई उप-बिंदु हैं जिनमें से पहला है, "आवश्यकता प्रदर्शित की गई है।" हम इसे उत्पत्ति अध्याय 2 श्लोक 18 और निम्नलिखित में पाते हैं: "और प्रभु परमेश्वर कहता है, कि मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं उसके लिये ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उसके योग्य हो।"

फिर वह कथन जिसका राजा जेम्स अनुवाद करता है। "मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊंगा जो उसके योग्य हो।" वहां अनुवादित शब्द "उसके लिए उपयुक्त" से पता चलता है कि वे समानता के माध्यम से मेल खाते थे। मैं आपको हिब्रू शब्द नहीं बताऊंगा लेकिन अगर आपने जर्मन शब्दकोष में हिब्रू शब्द को देखा तो आप पाएंगे कि वहां परिभाषा "स्वयं के बराबर और पर्याप्त मदद" है। तो भगवान कहते हैं कि यह अच्छा नहीं है कि मनुष्य अकेला रहे, उसे एक ऐसा सहायक होना चाहिए जो उसके अनुरूप हो, जो उसके बराबर और उसके लिए पर्याप्त हो। हम सोच सकते हैं कि "मदद" शब्द का अर्थ हीनता है, यदि हम अध्याय 1 पर वापस जाते हैं, तो आप पाएंगे कि पुरुष और महिला दोनों भगवान की छवि में बनाए गए थे और वे भगवान के सामने समान रूप से खड़े हैं, दोनों उनकी छवि में बनाए गए हैं। लेकिन स्त्री को पुरुष की दासी नहीं, बल्कि उसकी सहायता करनी चाहिए। वह वह है जो पुरुष की पूरक है, जो पुरुष से मेल खाती है, लेकिन इससे पहले कि परमेश्वर ने स्त्री को आदम को दिया, आदम से कहा गया कि उसे सभी प्राणियों, सभी जानवरों का नाम लेना है। तो आप आयत 19 में पढ़ते हैं कि, "प्रभु मैदान के इन सभी जानवरों और आकाश के पक्षियों को यह देखने के लिए ले आए कि वह उन्हें क्या कहते हैं।" श्लोक 20 में यह कहा गया है कि आदम ने मैदान के मवेशियों और जानवरों को नाम दिए लेकिन श्लोक 20 का अंतिम वाक्यांश, "उसके बराबर और पर्याप्त मदद नहीं मिली, जो उसके अनुरूप हो।" मुझे लगता

है कि इस सामग्री का उद्देश्य इस बात पर ज़ोर देना और सामने लाना है कि इन सभी जीवित प्राणियों में, कोई भी प्राणी ऐसा नहीं था जो आदम के अनुरूप हो, जो कि आदम जैसा था। प्राणियों और आदम के बीच एक अंतर था और वह इस बात से अवगत हो गया।

जब यह कहा जाता है कि एडम को इन सभी प्राणियों का नाम देना था, तो इसका मतलब सिर्फ उन्हें एक लेबल देने से कहीं अधिक है। उसने शायद किसी तरह से उन्हें उनके नाम से चित्रित किया जिसमें जानवरों के बीच के अंतर के बारे में कुछ समझना शामिल होगा और इस प्रक्रिया में वह अपने और जानवरों के बीच के अंतर के प्रति पूरी तरह से सचेत हो जाता है और उसे एक ऐसे साथी के साथ संगति की आवश्यकता होती है जो खुद के समान हो। .

बी। आदम की "पसली" या यह "पक्ष" है श्लोक 21 और 22 में भगवान द्वारा स्त्री की रचना करने के बाद, एडम कहता है, "अब अंत में" यह राजा जेम्स में नहीं है "यह मेरी हड्डियों में से हड्डी है, मेरे मांस में से मांस है।" अब आखिरकार, अब इन सभी अन्य प्राणियों का सर्वेक्षण करने के बाद, और यह देखने के बाद कि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके अनुरूप हो, अब आखिरकार, महिला ऐसा करती है। नारी विकासवादी विकास की उपज नहीं है। अब आप श्लोक 21 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया। और वह सो गया. और उस ने उसकी एक पसली निकालकर उसका मांस बन्द कर दिया। तो प्रभु आदम पर यह गहरी नींद, एक संज्ञाहरण की तरह, आप कह सकते हैं, लाते हैं।

जब वह सोता है, जैसा कि राजा जेम्स ने इसका अनुवाद किया है, भगवान ने उसकी एक पसली ले ली, और श्लोक 22 में एक महिला बनाई। "पसली" के लिए हिब्रू शब्द, जिसका उपयोग यहां किया गया है, तो आप में से उन लोगों के लिए जिन्होंने हिब्रू *सलाद खाया है*, एकवचन में लेकिन यहाँ यह बहुवचन रूप में है क्योंकि आप जानते हैं कि यह कहता है, "उसने अपनी एक पसली काट ली।" मेरी रुचि यह है कि इस संदर्भ में इस शब्द का अनुवाद करना कठिन है। दिलचस्प बात यह है कि इसकी अन्य घटनाओं में, इसका आम तौर पर "पक्ष" का अर्थ होता है, यहां एकमात्र स्थान है जहां इसका अनुवाद पूरे पुराने नियम में "पसली" किया गया है। यदि आप इस शब्द के उपयोग को देखें, तो आपको विभिन्न प्रकार के उपयोग मिलेंगे, लेकिन हमेशा एक पक्ष के

विचार के साथ। हमेशा नहीं, लेकिन आम तौर पर एक तरफ का उपयोग, निर्गमन 25:12 में, "सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों में लगाना, और दो कड़े एक ओर और दो कड़े दूसरी ओर हों।" इसका 'पक्ष,' वाचा के सन्दूक का जिक्र करते हुए। तो जहाज़ के एक तरफ और जहाज़ के दूसरे तरफ। और यही यह शब्द है। श्लोक 14 वही है। सन्दूक के किनारों पर, निर्गमन 27:7 में, "डंडे को अंगूठी में रखा जाएगा, डंडों को वेदी के दोनों किनारों पर रखा जाएगा।" निर्गमन 26:20 और निवास की दूसरी ओर और उत्तर की ओर बीस तख्ते हों, अर्थात् निवास की दोनों ओर। "जैसे दाऊद और उसके जनों ने अपना मार्ग लिया, वैसे ही शिमी भी पहाड़ी के किनारे से होकर चला गया, अर्थात् पहाड़ के किनारे से" (2) शमूएल 16:13).

अब समस्या यह है कि, उत्पत्ति 2:21 के संदर्भ में, आपके पास बहुवचन रूप है, इसके पहले हिब्रू में "इनमें से एक" है। सोते समय उसने "इनमें से एक" ले लिया और शायद पहले स्थान पर इसके उपयोग के कारण, 1 राजा 6, पसली के विचार को एक उपयुक्त अनुवाद के रूप में चुना गया है। 1 राजा 6:15 में इस शब्द का प्रयोग जहाँ आपने पढ़ा कि सुलैमान ने मन्दिर बनवाया, उसने घर की दीवारों को अन्दर देवदार के तख्तों से बनाया। अब बोर्ड फिर से बहुवचन रूप है। देवदार के बोर्ड, यह इसका एक असामान्य उपयोग है लेकिन संदर्भ में यह बोर्डों को इंगित करता है। घर की दोनों मंजिलों की दीवारों और छत को उसने अंदर से लकड़ी से और अंदर को फर के तख्तों से ढक दिया। प्लैंक बहुवचन रूप में है। तो 1 राजा 6 में उस तरह के उपयोग के साथ, यहां उत्पत्ति 2:21 शब्द से पहले के किसी एक के उपयोग का संयोजन। कई लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस संदर्भ में इसका सबसे अच्छा अनुवाद "रिब" है। हालाँकि यह शब्द अन्यत्र रिब के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता है। एनआईवी इसका अनुवाद कैसे करता है? मुझे इसकी जांच करनी होगी। एनआरएसवी के बारे में क्या? संभवतः "पसलियां" भी। मेरा मानना है कि इसका पसलियों के रूप में अनुवाद करना हिब्रू शब्द के उपयोग से कहीं अधिक स्पष्ट है। लेकिन मैं इससे बेहतर अनुवाद नहीं सुझा सकता, आप कह सकते हैं "पक्ष से लिया" और जो उसने पक्ष से लिया उसे एक संभावना के रूप में अव्यक्त छोड़ दें, लेकिन यह बहुवचन रूप के साथ न्याय नहीं करता है। तो आप देख सकते हैं कि अनुवाद की समस्या यहीं है। आप कुछ साहित्य पढ़ते हैं, इस अंश का अक्सर मज़ाक उड़ाया जाता है, "महिला ने पुरुष से पसली ली।" पुरुषों की तुलना में महिलाओं में एक पसली कम

होती है। पूरी बात एक तरह से उपहास की तरह है। इस संदर्भ में इस शब्द का वास्तव में क्या अर्थ है, इस पर एक निश्चित अस्पष्टता है। रिब एक उचित अनुवाद है लेकिन शायद यह कहीं अधिक उपयोग से प्राप्त होने वाली तुलना में थोड़ा अधिक स्पष्ट है।

किसी भी मामले में, एक और चीज़ जो पसली के विचार को पुष्ट करती है, वह पद 23 में एडम का कथन है। जब उसने महिला को देखा, तो उसने कहा, "यह अब मेरी हड्डियों में की हड्डी है, मेरे मांस में का मांस है।" तो हड्डी ले ली गयी। लेकिन सवाल यह है कि क्या इसे शाब्दिक अर्थ में उस हद तक आगे बढ़ाने का इरादा है या क्या यह करीबी रिश्ते के संदर्भ में अधिक आलंकारिक है। 2 शमूएल 5:1 में आप पढ़ते हैं, "तब इस्राएल के सब गोत्र दाऊद से बातें करने को हेब्रोन में आए, और कहने लगे, हम ही तेरी हड्डी और मांस हैं।" सारे इस्राएली दाऊद से कहते थे, हम तेरी हड्डी और मांस हैं। जाहिर है, वहां की अभिव्यक्ति में यह निकटता है कि वह उनमें से एक है। शायद आप उत्पत्ति 2:23 में भी यही बात कहेंगे जब एडम की अभिव्यक्ति, "यह वही है जो मेरे अनुरूप है, जो उस चीज़ से बनाया गया है जो मुझसे छीन लिया गया है।" हाँ। वह 2 शमूएल 5:1 था।

क्या यह वास्तव में एक पसली थी जो ली गई थी, मुझे लगता है कि मुद्दा यही है। स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो मनुष्य से लिया गया था, उसका शरीर खोला गया था, उसे गहरी नींद में डाल दिया गया था, और जो कुछ छीन लिया गया था, उससे महिला बनाई गई थी। हो सकता है कि वह एक पसली रही हो, यह एक पसली से भी अधिक रही हो। यह जाहिर तौर पर एक आदमी की तरफ से लिया गया है।

सी। एडम और मानव जाति की एकता      मुद्दा यह है कि जब एडम जागता है और महिला को देखता है, तो वह खुद को कुछ पहचानता है। फिर हिब्रू काव्यात्मक रूप में एक अभिव्यक्ति दी गई है। यदि आप एनआईवी को देखें तो आप देख सकते हैं कि जिस तरह से पंक्तियाँ स्थापित की गई हैं, वह गद्य में नहीं बल्कि कविता में है। वह कहता है, "यह अब मेरी हड्डियों में की हड्डी, मेरे मांस में का मांस है, वह नारी कहलाएगी, क्योंकि वह नर में से निकाली गई है।" जानवरों के बीच उसे ऐसा कोई साथी नहीं मिला था, लेकिन उसे एक मददगार साथी मिला जो उसके अनुरूप था, यानी कि

उसके जैसा ही कोई। भगवान ने उसे एक साथी दिया था और वह अपने और महिला के बीच एकता को पहचानता है। स्त्री के पुरुष से निर्मित होने का अर्थ देखिए। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि यहां न केवल ईश्वर के विशेष रचनात्मक कार्य के रूप में पुरुष से महिला की उत्पत्ति के संबंध में महत्व है, बल्कि विवाह संस्था का भी महत्व है। मुझे लगता है कि हमें श्लोक 24 में महत्व मिलता है क्योंकि तुरंत आप यह कथन पढ़ते हैं, "इसलिए, मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़ देगा, और अपनी पत्नी के पास रहेगा और वे एक तन होंगे।"

आपकी ग्रंथ सूची में मैंने इस फ्रांसिस शोफ़र पृष्ठ 45 का उल्लेख किया है। शोफ़र कहते हैं, "निश्चित रूप से पुरुष से महिला की रचना के तथ्य का एक निश्चित दार्शनिक महत्व है क्योंकि इसका मतलब है कि पुरुष वास्तव में एक अद्वितीय पुरुष है और वह सिर्फ से नहीं आया है कहीं नहीं, न ही वह अनगिनत शुरुआतों से उभरा है। एक आदमी की एकता में एक शुरुआत और एक वास्तविक शुरुआत थी, एक व्यक्ति अपने पहले के सभी लोगों से अलग हो गया, फिर पुरुष और महिला के संदर्भ में अलग हो गया। मनुष्य की यही तस्वीर मानव जाति की एकता की ईसाई अवधारणा को ताकत देती है। दुनिया यह साबित करने के लिए आधार ढूंढने की कोशिश कर रही है कि सभी मनुष्य एक हैं। लेकिन ईसाई को यह समस्या नहीं है। क्योंकि हम समझते हैं कि मानव जाति क्यों एकजुट है। इसके अलावा, हम विवाह के बारे में कुछ समझना शुरू कर सकते हैं क्योंकि ईश्वर स्वयं विवाह बंधन को मानव जाति की एकता की वास्तविकता से जोड़ता है। इसलिए, हम नर और मादा के मिलन की विशिष्टता के बारे में कुछ समझ सकते हैं जो एक संपूर्ण है। वे एक तन बन जाते हैं। "पुरुष" जिसका अक्षर M है, पुरुष और महिला के बराबर है। और एक पुरुष एक महिला का मिलन, उस एकता को फिर से जोड़ता है।"

डी। उत्पत्ति 2:24 वर्णनकर्ता की टिप्पणी: स्पष्टीकरण या आदेश अब अधिकांश व्याख्याकार इस बात से सहमत हैं कि श्लोक 24 में वह कथन लेखक के शब्द हैं, न कि एडम के शब्दों की निरंतरता। आयत 23 में देखें, एडम कहता है, "अब, यह मेरी हड्डियों में की हड्डी है, मेरे मांस में का मांस है, इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।" अब आपको कोई निरंतरता नहीं, बल्कि वर्णनकर्ता की एक टिप्पणी मिलती है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह ईश्वर का

वचन नहीं है, वास्तव में, वह श्लोक मैथ्यू 5 में ईसा मसीह द्वारा उद्धृत किया गया है। श्लोक 24 के संबंध में प्रश्न यह है कि क्या इसे स्पष्टीकरण या आदेश के रूप में लिया जाना चाहिए? "इसलिये मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे शारीरिक रूप से एक होंगे।" क्या यह कोई स्पष्टीकरण है या ऐसा कुछ जो हर समय होता रहता है? या क्या यह किसी चीज़ का निषेधाज्ञा, आदेश है, जिसे मनुष्य को अवश्य करना चाहिए। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने इसे एक आदेश के रूप में लिया है। हिब्रू वाक्यविन्यास इसे किसी भी तरह से समझने की अनुमति देगा, यह एक अपूर्ण मौखिक रूप है। "मनुष्य अपने पिता और अपनी माता को छोड़ देगा," हिब्रू में एक अपूर्ण काल किसी आदेश को व्यक्त करने के लिए निषेधाज्ञा हो सकता है या इसे बारंबार या अभ्यस्त के रूप में लिया जा सकता है - कुछ ऐसा जो हमेशा होता है। जिन लोगों ने इसे प्रथम अर्थ में, एक आदेश के रूप में लिया, उनमें जॉन कैल्विन भी थे। उनका कहना है कि "'होगा' को भविष्य के रूप में नहीं बल्कि अनिवार्यता के अर्थ में लिया जाना चाहिए।" इसलिये मनुष्य को अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के पास रहना चाहिए। और उनकी टिप्पणी एक रचनात्मक प्रक्रिया के आधार पर है क्योंकि जिस तरह से स्त्री का निर्माण हुआ है, पुरुष को भी ऐसा ही करना चाहिए। व्याकरणिक दृष्टि से इसे इस तरह समझना संभव है, लेकिन इसे एक तथ्य, एक तथ्य की व्याख्या के रूप में लेना भी संभव है। और मुझे लगता है कि यह बेहतर है। और दूसरे शब्दों में, श्लोक 24 में एक स्पष्टीकरण दिया गया है कि एक आदमी के लिए अपने पिता और अपनी माँ को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहना क्या होता है। मनुष्य ऐसा क्यों करता है? ऐसा नियमितता से क्यों होता है? आप कह सकते हैं कि यह सामान्य बात क्यों है? कारण सृष्टि में पाया जाता है। भगवान ने पुरुष और महिला को एकता में बनाया, और पुरुष और महिला को एक दूसरे के साथ एकता और संगति की तलाश करने के लिए बनाया गया है, क्योंकि दोनों एक तन बन जाते हैं। अब मैं सोचता हूँ कि इन सबका निहितार्थ यह है कि एकपत्नी विवाह सृष्टि में निहित है।

दूसरी स्थिति आम तौर पर मानव जाति की एकता की बात करती है, लेकिन आपको यहां यह भी विचार है कि एकपत्नी विवाह सृष्टि में निहित है। आपके पास पुरुष और उसकी पत्नी के बीच उस आंतरिक एकता की व्याख्या है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे मूल रूप से एक थे, और अब विवाह संबंध में एकता बहाल हो गई है। मनुष्य इस उत्पत्ति 2 के वृत्तांत में दैवीय रहस्योद्घाटन

द्वारा जानता है कि महिला को उसके शरीर से लिया गया था और विवाह संबंध में, आपके पास उस मूल एकता की बहाली है।

आपको उस अभिव्यक्ति, "एक तन बनो" को शारीरिक यौन मिलन तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। निश्चित रूप से इसमें वह शामिल है और इसमें वह भी शामिल है और पुरुष और महिला के बीच की एकता, उसमें अभिव्यक्ति पाती है। 1 कुरिन्थियों 6:16 में एक टिप्पणी है, जो कहती है, "तुम क्या नहीं जानते, कि जो वेश्या से मिला, वह एक शरीर है।" निश्चित रूप से यह एक शारीरिक मिलन की बात कर रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि इसमें इसके अलावा भी बहुत कुछ शामिल है। उस कथन में, "मनुष्य अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा और वे एक तन होंगे," मुझे ऐसा लगता है कि एकता में आध्यात्मिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक मिलन के साथ-साथ शारीरिक मिलन भी शामिल है। यह बहुत जटिल चीज़ है। वे सभी आपस में जुड़े हुए हैं। फिर, मुझे लगता है कि यह इस तथ्य को रेखांकित और रेखांकित करता है कि उस तरह की एकता के लिए, एक विवाह आवश्यक है।

लेकिन मुझे लगता है कि वहां जिस बात पर चर्चा की जा रही है वह बहुत महत्वपूर्ण है। शादी के बंधन में अब दो लोग दो नहीं रहे। दूसरे शब्दों में, वे एक दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। वे एक ऐसी एकता में बंधे हैं जिसमें न केवल शारीरिक संबंध बल्कि दो लोगों का आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक मिलन भी शामिल है।

5. विकास के बारे में क्या? ठीक है। आइए 5 पर चलते हैं। "विकास के बारे में क्या?" पुनः, तीन उप-बिंदु हैं। पहला शब्द का अर्थ है। जब हम विकास के बारे में बात करते हैं तो हमें यह समझना होगा कि इस शब्द का प्रयोग अक्सर अलग-अलग तरीकों से किया जाता है। अधिकतर, इसका उपयोग इस सिद्धांत के लिए किया जाता है कि प्रत्येक जीवित वस्तु प्राकृतिक कारणों से आई है और प्राकृतिक चयन द्वारा सरल से जटिल हो गई है। यह वृहत विकासवादी सिद्धांत है। यह एक अमीबा है जो सिद्धांत के अनुसार मानव जाति के लिए विकसित हुआ है। मूल रूप से, कुछ बहुत प्राचीन अतीत में, चीजें ऐसी स्थितियों में एक साथ आती थीं। सिद्धांत का निर्माण हुआ, कि जीवन ने खुद को अलग करना शुरू कर दिया, और समय और प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया के माध्यम से,

अंततः जीवित चीजों की सभी विविधताएं जिन्हें हम अब जानते हैं, उस प्रक्रिया के माध्यम से आई हैं। यह इस शब्द का सामान्य अर्थ और उपयोग है, और मुझे लगता है कि हम बिना किसी योग्यता के कह सकते हैं कि ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे इस विचार को उत्पत्ति 1-3 के रचना विवरण के साथ सामंजस्य बिठाया जा सके।

अब दिलचस्प बात यह है कि पिछले 10-15 वर्षों में सक्षम वैज्ञानिकों द्वारा विकासवादी सिद्धांत के बारे में बहुत गंभीर सवाल उठाए गए हैं। यहां तक कि, मैं यहां उन सृजन वैज्ञानिकों के बारे में नहीं सोच रहा हूं जिन्होंने विकासवादी सिद्धांत के बारे में ये सवाल उठाए हैं, बल्कि उन सक्षम वैज्ञानिकों के बारे में सोच रहे हैं जो मूल ईसाई धर्म के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। ऐसे लोगों द्वारा भी विकासवादी सिद्धांत पर गंभीर सवाल उठाए जा रहे हैं। इसका एक उदाहरण आपकी ग्रंथ सूची में सूचीबद्ध है। पृष्ठ का शीर्ष 9। तीसरी प्रविष्टि, सर फ्रेड हॉयल। शीर्षक है *अंतरिक्ष से विकास*। मुझे नहीं पता कि आपमें से किसी ने उस किताब के बारे में सुना है या नहीं जब वह 1981 में रिलीज़ हुई थी। मेरे पास यहां उसकी एक समीक्षा है जो उस किताब की सामग्री का कुछ हद तक अंदाज़ा देती है और मैं आपको किताब के कुछ हिस्से पढ़वाऊंगा। समीक्षा में कहा गया है, "एक प्रतिष्ठित ब्रिटिश वैज्ञानिक ने डार्विनियन विकासवादी सिद्धांत पर एक नया हमला करते हुए कहा है कि इसके सच होने की संभावना बहुत ही कम है और यह बेतुका भी है।" बेशक, इसके लेखक सर फ्रेड हॉयल हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त खगोलशास्त्री और गणितज्ञ हैं, वह रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी से भी जुड़े हुए हैं, उन्होंने इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में अग्रणी विश्वविद्यालय भी शुरू किए हैं।

समीक्षा में आगे कहा गया है, "वह आम उत्पत्ति से विभिन्न जीवन रूपों के क्रमिक विकास की डार्विनियन अवधारणा को सीधे चुनौती देता है और यह भी कि कुछ मौलिक ओज़ की यादृच्छिक प्रक्रिया द्वारा विकसित पहली जीवित कोशिकाएं, ऐसा होने की संभावना नहीं है शून्य से बहुत दूर," वह कहते हैं। हॉयल 67 वर्ष के हैं और उन्हें अपने क्षेत्र में कई सम्मान प्राप्त हैं, वह ईसाई नहीं हैं और उनका अध्ययन धर्मग्रंथ पर आधारित नहीं है। बल्कि, यह स्थिति के उनके विश्लेषण पर आधारित है, वे कहते हैं, "जैव-अणु अब अत्यधिक जटिल माने जाते हैं, उनके संयोजन के लिए काफी स्पष्ट निर्देश आवश्यक थे, और जीवन के विकास के लिए प्राकृतिक चयन के अन्य साधनों

की आवश्यकता थी। अपेक्षित जानकारी खुफिया जानकारी से मिली ।"

अब वह बुद्धि को भगवान कहने को तैयार नहीं है, लेकिन वह कहता है कि यह बुद्धि से आई होगी, जिसे वह "दिखाने वाला भूत" कहता है। नए साक्ष्य स्पष्ट और निर्णायक रूप से ब्रह्मांडीय उत्पत्ति की ओर इशारा करते हैं। उनका विचार है कि जीवन इस ग्रह से नहीं, बल्कि कहीं अंतरिक्ष में आया है। लेकिन वह जो कह रहे हैं वह यह है कि आप इस विकासवादी सिद्धांत के आधार पर कई अलग-अलग जीवन रूपों की जटिलता की व्याख्या नहीं कर सकते हैं। वह सोचता है कि यह बकवास है। मामला बनाते समय ये दो लेखक, रे फाइन, डार्विन सिद्धांत के विरुद्ध सूक्ष्म जीव विज्ञान, गणित, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी और जीवाश्म रिकॉर्ड का हवाला देते हैं। नए ज्ञान से सिद्धांत कमजोर पड़ गया है।

उनका कहना है कि जीवाश्म विज्ञानी वर्षों से सिद्धांत के लिए आवश्यक धीमे विकासवादी संबंध को पहचान रहे हैं जो घटित नहीं हुआ था, लेकिन इसने आम राय पर ज्यादा प्रभाव नहीं डाला है। दोनों वैज्ञानिकों ने गणना की है कि

जीवन के बुनियादी जटिल एंजाइमों का उत्पादन करने वाले कुछ प्राइमर्डियल सूपों में यादृच्छिक रासायनिक फेरबदल की संभावना एक से दस से 40<sup>वीं</sup> शक्ति तक होती है, या एक के बाद 40 हजार शून्य तक होती है। शैक्षिक प्रणाली में डार्विनवाद से आगे बढ़ने में कठिनाई: अकर्मण्यता वे कहते हैं कि संभावनाएँ इतनी अत्यधिक कम हैं कि यह अविश्वसनीय होगा, भले ही पूरा ब्रह्मांड एक कार्बनिक सूप से बना हो। यह स्थिति आनुवंशिकीविदों को अच्छी तरह से ज्ञात है और फिर भी कोई भी इस पर ध्यान नहीं देता है। यदि डार्विनवाद सामाजिक रूप से वांछनीय नहीं था, तो यह निश्चित रूप से अन्यथा होता। तो वह कह रहे हैं कि सिद्धांत के बने रहने का कारण यह है कि यह एक वैज्ञानिक आधार नहीं है, यह एक ठोस सिद्धांत है, यह कुछ ऐसा है जो सामाजिक रूप से वांछनीय है। "वे अपने स्वयं के विद्रोह पर ध्यान देते हैं"। मुझे पिछला वाक्य पढ़ना चाहिए, "एक बार जब पूरा समाज अवधारणाओं के एक विशेष समूह के लिए प्रतिबद्ध होना शुरू कर देता है, तो शैक्षिक निरंतरता पैटर्न को बदलना बेहद कठिन बना देती है" लेखक कहते हैं, "या तो आपको अवधारणाओं पर विश्वास करना होगा या आपको एक ब्रांड बना दिया जाएगा।" विधर्मी।" उन्होंने नोट किया कि उनके

स्वयं के विद्रोह का उस उग्र हमले के साथ स्वागत नहीं किया गया जैसा कि उन्हें उम्मीद थी। लेकिन वैज्ञानिक पत्रिकाओं में चुप्पी की दीवार के साथ, जो डार्विनवाद को कायम रखने के लिए किसी भी परिकल्पना को स्वीकार कर लेती है। प्रत्येक सक्षम अंतरिक्ष गणितज्ञ आपको आश्चर्य करेगा कि ऐसे डार्विनियन विचार के काम करने की कोई संभावना नहीं है, और वे जिस बारे में बात कर रहे हैं वह उत्परिवर्तन है जो उच्च जीवन रूपों की प्रगति की व्याख्या करता है। प्रत्येक कंप्यूटर विशेषज्ञ आपको निश्चित रूप से सूचित करेगा, कंप्यूटर में यादृच्छिक गलतियाँ डालना इसे सुधारने का कोई तरीका नहीं है। जैसा कि लेखक ने कहा है, डार्विनवाद घटित विकासवादी परिवर्तनों की व्याख्या करने में अपर्याप्त है।

विकासवादी सिद्धांत पर कार्ल हेनरी अब, मैंने उस समीक्षा की लंबाई और विकासवादी सिद्धांत के बारे में हाल ही में उठाए जा रहे प्रश्नों के एक उदाहरण का उदाहरण पढ़ा है। फिर भी, जैसा कि वे कहते हैं, बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक समुदाय में, सिद्धांत को वास्तव में समाप्त नहीं किया जा रहा है, इसे आगे बढ़ाना बहुत कठिन है, समय और ऊर्जा का संचयी निवेश, सिद्धांत और लेखन प्रतिबद्धता और इसके बाकी सभी विकासवादी सिद्धांत का समर्थन करते हैं .

इस समीक्षा में, मेरे पास इस समीक्षा की कोई तारीख नहीं है। आइए मैं हॉयल की पुस्तक और इनमें से कुछ विचारों को आम तौर पर *ईश्वर रहस्योद्घाटन और प्राधिकरण में कार्ल हेनरी की चर्चा के लिए लिखा गया हूँ*। यह पृष्ठ 9 में दूसरी प्रविष्टि है। इसमें एक लंबा खंड है जहां वह विकासवादी सिद्धांत के संबंध में वर्तमान स्थिति पर चर्चा करता है। यह पढ़ने लायक अध्याय है, पूरा अध्याय यहाँ है। लेकिन पृष्ठ 178 पर, वह हॉयल की पुस्तक की चर्चा करते हैं। और उनका कहना है कि हॉयल ने अन्य लोगों द्वारा भी चर्चा की गई संभावना का अनुमान लगाया है कि जीवन बाहरी अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आया था।

केज़िया पार्क द्वारा  
प्रतिपादित      टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

